द्वितीय अध्याय
शोध प्रविधि
(Research Methodology)
द्वितीय अध्याय

शोध प्रविधि

(Research Methodology)

अध्ययन की समस्या :-

(Problems of Study)

भारतीय समाज अति प्राचीन है जिसमें निरन्तरता देखने को मिलती है इसका तात्पर्य यह नहीं कि इसमें जागरूकता का अभाव है बल्कि इसकी गति में अन्तर है। यदापि किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सदैव विद्यमान होती है लेकिन हमारे सामाजिक संरचना में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन अन्य समाजों की अपेक्षा काफी भिन्न प्रकार के होते हैं। एक तरफ हमारी सामाजिक संरचना प्राचीनतम है, जिसके कारण इसमें परिवर्तन की प्राक्कल्पक शक्ति इतनी नहीं बन पाती है तो दूसरी तरफ हमारी समाज व्यवस्था में उन प्रक्रियाओं का विकास काफी बाद में हुआ जो आधुनिक परिवर्तन एवं सम्पत्ति के प्रमुख कारक के रूप में उत्तरदायी हो सकते हैं।

समाज में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग के स्त्री-पुरुष एक साथ निवास करते हैं जिनके घरों की शिक्षित स्त्रियाँ विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से अध्ययन, अध्यापन, अर्थोपार्जन, मनोरंजन आदि के द्वारा अपने घरों को सुरक्षित करने में लगी होती हैं। प्रत्येक स्त्री अपने
घर-बाहर की परिस्थितियों, अन्तःक्रियाओं, संचार के साधनों एवं गमनागमन की प्रक्रियाओं से प्रभावित होती है एवं दूसरे को प्रभावित करती रहती है। अन्तःक्रिया के इस धरातल पर ये स्त्रियों विशिष्ट सामाजिक परिवेश में अन्य लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित करती हैं, समायोजन करती हैं, तथा अपने भविष्य की दिशा निर्धारित करती हैं। ऐसे में ही समाज में कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी होती हैं जो अत्याधुनिक तकनीक के नवागत विचार तथा परिस्थितियों व सांस्कृतिक आचार के द्वारा नारी जाति को दिशा निर्धारित करते हुए नारी सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही प्रस्तुत अध्ययन की समस्या है जिसमें इन्हें शिक्षित नारियों की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :—

(Object of Study)

प्रस्तुत अध्ययन में नारी सामाजिक उत्थान में शिक्षित नारी की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. शिक्षित नारी नवचारक के रूप में नारी समाज को कितना प्रभावित करती है?

2. नारी सशक्तिकरण एवं ग्रामीण नारी के मध्य कड़ी के रूप में किये जा रहे कार्यों में शिक्षित नारी का क्या योगदान है?

3. शिक्षित नारी की सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन।

4. शिक्षा के गुण उसका दृष्टिकोण कैसा है?
5. परिवार के एक सदस्य के रूप में शिक्षित नारी की भूमिका एवं उसके अनुपालन में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।

6. शिक्षित नारी की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

उपकल्पनाएँ :

(Hypothesis)

अनुसंधान में वैज्ञानिक पद्धति का सही प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक होता है कि अनुसंधान से सम्बन्धित कुछ प्रारम्भिक ज्ञान और सामान्य अनुभव प्राप्त कर लिया जाय। इसीमें सामान्य अनुभवों को उपकल्पना कहा जाता है। लुंबार्न्ध के शब्दों में "उपकल्पना एक कामचलाऊ सामान्यकरण होती है जिसकी सत्यता की जाँच अभी बाकी होती है।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकल्पनाएँ प्रयोग की गयी हैं—

1. ग्रामीण नारियों अधिकतर अनुमान करती हैं।

2. सरकारी योजनाओं एवं विकास कार्यक्रमों की जानकारी समस्त महिलाओं को नहीं होती। कुछ शिक्षित महिलाएँ ही इसकी जानकारी रखती हैं।

1. A Hypothesis as a tentative generalization, the validity of which remains to be tested.

Lundberg, Social Research.
3. उच्च शिक्षित महिलाओं में सामान्यतः शैक्षिक गतिशीलता अधिक होती है।

4. अधिकतर शिक्षित नारियाँ परिवार में अपनी व्यक्तिवादी परिस्थितिवश असंतुष्ट रहती हैं।

अध्ययन क्षेत्र :—

(Field of Study)

अध्ययन हेतु एक ऐसे क्षेत्र का चयन आवश्यक है जिस क्षेत्र की पहचान न केवल सौदागरिक रूप से अपितु व्यवस्थापित के गरीबों पर भी ग्रामीण सामाजिक समस्याओं एवं व्यवस्थाओं से परिपूर्ण हो। इसलिए विषय की गहनता, व्यापकता एवं साधनों की सीमितता को ध्यान में रखकर समस्या का परिसीमन करते हुए पूर्वी उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जनपद के कादीपुर विकास खण्ड को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है।

जनपद सुलतानपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद मण्डल में आता है। इसके पूरब में आजमगढ़ एवं जौनपुर जिले, दक्षिण में प्रतापगढ़ व शाहूजी महाराज नगर (अमेठी) जिले, पश्चिम में रायबरेली व बाराबंकी जिले तथा उत्तर में फैजाबाद व अम्बेडकर नगर जिले स्थित हैं।

विकास खण्ड कादीपुर जनपद सुलतानपुर का एक ऐतिहासिक महत्व का विकास खण्ड है। इसके उत्तर में दोस्तपुर व जयसिंहपुर
विकास खण्ड, पश्चिम में लम्बुआ व प्रतापपुर कमेश्वर विकास खण्ड हैं। जबकि कादीपुर विकास खण्ड की पूर्वी व दक्षिणी सीमा जोतंपुर जनपद से लगती है। प्रसिद्ध विजेश्वरा महावीर मन्दिर कादीपुर विकास खण्ड के अन्तर्गत आता है। अध्ययन हेतु कादीपुर विकास खण्ड के जिन पाँच गाँवों का चयन किया गया है उनका संक्षिप्त विवरण अग्रलिखित है।

1. गोपालपुर :-
कादीपुर विकास खण्ड मुख्यालय से साता हुआ गाँव गोपालपुर है जिसकी जनसंख्या 3500 है। वर्तमान में गाँव की ग्राम प्रधान श्रीसमती जल्लू देवी हैं। इस गाँव में लगभग समस्त जालियों के लोग निवास करते हैं। गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय व एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है जिससे बुनियादी शिक्षा गाँव में पूर्ण हो जाती है। गाँव में विद्युतीकरण है।

2. कटसारी :-
कादीपुर विकास खण्ड मुख्यालय से 3.5 किमी दूरी पर स्थित गाँव कटसारी है जिसकी कुल जनसंख्या 5000 है। वर्तमान में श्री जितेन्द्र सिंह ग्राम प्रधान हैं। कटसारी गाँव में दो प्राथमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा एक मान्यता प्राप्त हाइस्कूल है। गाँव में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ गाँव में ही हल हो जाती है। गाँव में एक मरी माता का मन्दिर है।
प्रदेश स्तर का प्रसिद्ध मेला धो-पाप इसी गाँव में लगता है जहाँ गांगा
दशहरा के अवसर पर लाखों लोग इकट्ठा होते हैं। गाँव में बिजली
की सुविधा उपलब्ध है।

3. अल्टीमऊनूरपुर :-

लगभग 3000 की जनसंख्या वाला गाँव अल्टीमऊनूरपुर है
जिसके ग्राम प्रधान श्री आनन्द मोहन सिंह हैं। गाँव में एक प्राथमिक
विद्यालय तथा एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है। गाँव में सभी बस्तियाँ
तथा विद्युत की सुविधा उपलब्ध है। इस गाँव में ओघड़ कीनाराम
का मठ है जहाँ उनके अनुयायी इकट्ठा होते हैं।

4. बनके गाँव :-

कादीपुर विकास खण्ड मुख्यालय से 8 किमी0 दूर स्थित बनके
गाँव चड़क से जुड़ा हुआ है। इस गाँव की जिला मुख्यालय से दूरी
39 किमी0 है। गाँव में विद्युलीकरण है। बनके गाँव में एक प्राथमिक
विद्यालय है।

5. कटघर नरायण पारा :-

कादीपुर विकास खण्ड मुख्यालय से 15 किमी0 दूर
बलिया-लखनऊ राजमार्ग पर स्थित गाँव कटघर नरायण पारा है।
गाँव की कुल जनसंख्या लगभग 4500 है। वर्तमान में श्री अरुण
हरिजन गाँव के प्रधान हैं। गाँव में सिंचाई हेतु द्वृत्तवेल एवं नहर की
सुविधा है। बिजली की सुविधा भी गाँव में उपलब्ध है।
निदर्शन पद्धति :—

(Sampling System)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु उत्तरदाताओं (शिक्षित नारी) का चयन इस प्रकार किया गया है कि सभी क्षेत्रों, आयु समूहों, शैक्षणिक स्तरों आदि का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व हो सके। शोध विषय को ध्यान में रखते हुए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा 400 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

निदर्शन के औचित्य पर सर्वप्रथम पाँच गाँवों से कुल 800 उत्तरदाताओं का चयन किया गया था जिसमें प्रति सोपानक्रम (alternate) में दो में से एक का चयन करते हुए 400 उत्तरदाताओं को अध्ययन हेतु चयनित किया गया।

आँकड़ा संकलन प्रविधि :—

(Data Collection Method)

नारी सामाजिक उत्थान में शिक्षित नारी की भूमिका का अध्ययन करने के लिए समस्त से सम्बद्ध तथ्यों का एकत्रीकरण सर्वथा समाज वैज्ञानिक प्रशिक्षित प्रशिक्षित अनुसूची का प्रयोग करके किया गया है। इसमें निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर तथ्य एकत्रित किये गये हैं—

1. साक्षात्कार अनुसूची :—

(Interview Schedule)

सर्वप्रथम अध्ययन की समस्त से सम्बद्ध विभिन्न पक्षों की
जानकारी के लिए प्रश्नों की सूची तैयार की गयी। अनुसूची में प्रयुक्त प्रश्नों की प्रकृति मुक्त तथा अनुक्त दोनों हैं। अनुक्त प्रकृति के प्रश्नों में कुछ वैकल्पिक, कुछ श्रेणीबद्ध तथा कुछ संयोजित प्रश्न सम्मिलित हैं। मौलिक अनुसूची का 30 इकाईयों पर पूर्ण परीक्षण किया गया।

परीक्षण के आधार पर अनुसूची के कुछ अस्पष्ट तथा अनिश्चित प्रत्युत्तर वाले प्रश्नों को निकाल दिया गया, कुछ अतिरिक्त प्रश्नों की आवश्यकता महसूस की गयी उन्हें सम्मिलित किया गया तथा कुछ प्रश्नों की भाषा एवं प्रकृति में संशोधन किया गया। सर्वप्रथम महिलाओं से साक्षात्कार अनुसूची पर टिप्पणी करने, प्रश्नों की आलोचना करने को कहा गया और उन्हें प्रश्न जोड़ने निकालने या नये ढंग से ढालने के बारे में सुझाव देने को कहा गया। उसके बाद इसे पूर्ण परीक्षण के परिणामों एवं अनुभवों के अनुसार साक्षात्कार अनुसूची को अन्तिम रूप देकर निर्धारित किया गया।

2. अवलोकन :-

(Observation)

तथ्यों को अत्यधिक प्रमाणिक रूप में पाने के लिए सूचनादाताओं के साथ उनके आवास पर जाकर उनकी अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों का अवलोकन किया गया। इससे तथ्यों को महत्वपूर्ण ढंग से एकत्रित करना सम्भव हो पाया। इसके अतिरिक्त जो तथ्य साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा एकत्रित किये गये उनका मूल्यांकन अवलोकन की पद्धतियों
से किया गया ताकि किसी प्रकार की त्रुटि न रह सके। इस पद्धति के द्वारा उनके मूल्यों, विचारों एवं वास्तविक व्यवहारों के अन्तरों का अध्ययन किया गया।

तथ्यों के एकत्रीकरण में उपरोक्त प्राथमिक स्रोतों के अलावा द्वैतीयक स्रोतों का भी प्रयोग किया गया है। इस सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के सर्वक्षणों, रिपोर्टों व जनगणना से प्राप्त ऑक्ड्रों के साथ ही डायरियों, प्रलेखों आदि का प्रयोग किया गया। इससे समस्या का ऐतिहासिक परिवेश जानने में मदद मिली।

ऑक्ड्रों का प्रदर्शन, विश्लेषण एवं सामान्यीकरण :-

(Presentation, Analysis and Generalization of Data)

प्रस्तुत शोध में उपरोक्त सभी स्रोतों द्वारा संकलित सभी तथ्यों को आयु, धर्म, वर्ग, आय, शिक्षा जैसे परिवर्त्य के आधार पर सारणीकृत एवं विश्लेषित किया गया है। शोध के विभिन्न ऑक्ड्रों को उनकी प्रकृति के अनुकूल विशिष्ट वर्गों में रखा गया है। शोध के ऊदेश्य के अनुकूल ही तथ्यों को वर्गीकृत किया गया है। विशिष्ट वर्गों के तथ्यों को सरल एवं सहसम्बन्धात्मक (क्राफ़) सारणियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

उपरोक्त विधियों के प्रयोग द्वारा जो तथ्य प्रस्तुत किये गये उनके आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण और ऐतिहासिक व अवधारणात्मक
व्याख्यायें की गयी हैं। यह अध्ययन विश्लेषणात्मक तथा प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक है। इसमें अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक प्रारूपों का भिन्नण करने का प्रयास किया गया है। इन तथ्यों को आधार बनाकर विभिन्न सैद्धांतिक अभिगमों एवं अवधारणाओं की आलोचनात्मक व्याख्या करके शोध के निष्कर्षों को सार्वभौमिकता प्रदान की गयी है। ऑफिडों के संख्या एवं प्रतिशत को सारणियों में रखा गया है। हमने किसी सिद्धांत या व्यवस्था का प्रतिपादन नहीं किया है, लेकिन इस बात का प्रयत्न अवश्य किया है कि जो निष्कर्ष निकले वे व्यापक और विश्वसनीय हों, तथा उनसे घटनाओं का स्पष्टीकरण अवश्य हो जायें।

अध्ययन की कठिनाइयाँ :-

(Difficulties of Study)

प्रस्तुत शोध कार्य “नारी सामाजिक उत्थान में शिक्षित नारी की भूमिका” पर केन्द्रित है। यह एक जटिल एवं व्यापक क्षेत्र का विषय है। इसके अध्ययन में अनेक तरह की कठिनाइयों का आना स्वाभाविक था क्योंकि प्रस्तुत विषयवस्तु अनेक अध्ययनों के बावजूद आज भी अस्पष्ट है। इन जटिलताओं के बीच प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया अध्ययन कठिनाइयों से भरा रहा साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि विषयवस्तु के अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में चयनित सूचनादाता शिक्षित महिलाएँ हैं जो विषयवस्तु के महत्त्व से अपरिचित थीं, इसलिए उनसे विषयवस्तु के अध्ययन के अनुरूप तथ्यों को प्राप्त करने में काफी
कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अनेक महिलाएँ इस प्रकार की भी मिलीं जिन्होंने प्रत्यक्ष यह जानना चाहा कि इससे इनको क्या लाभ मिलेगा? इस सन्दर्भ में अध्ययनकर्ता ने अध्ययन विषयवस्तु के यथार्थ से जब उन्हें अवगत कराया तो उन्होंने सहर्ष सहयोग दिया।

पूर्ववर्ती अध्ययनों की संक्षिप्त रूपरेखा :-

भारतीय सिद्धांतों के सम्बन्ध में अनेक समाजशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों एवं इतिहासिकों ने अध्ययन किया है जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं:-

दुर्गा (1914), राव (1910), सोरोकिन (1927), श्रीनिवास (1968) एवं अन्य समाजशास्त्रियों ने सामाजिक पृष्ठभूमि और सामाजिक परिधिरत्न व गत्यात्मक के वृंहद अन्तर्वर्त्त्वों का अध्ययन किया है।

सीमेन (1953), ग्रास (1958), गुड़े (1960), हार एण्ड गार्डन (1973) ने बताया कि प्रत्यक्ष कर्ता के पास सीमित समय होता है जिसमें उसे अपनी विभिन्न भूमिकाएँ निभानी होती हैं, फलस्वरूप भूमिका व्याप्त जन्म लेता है।

राटर (1970) के अपेक्षा सिद्धांत के अनुसार कार्यरत महिला अपने कार्यस्थल तथा परिवार से अपेक्षाएँ व आशाएँ रखती हैं। उसकी ये आशाएँ जब उसके व्यविधित आदेशों के अनुसार नहीं होती तो भूमिका व्याप्त की स्थिति उत्पन्न होती है।

76
काला रानी (1976) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं
को अनेक प्रकार की भूमिकाओं को करना पड़ता है जिसके कारण
उसका व्यवहार अधिक जटिल हो जाता है।

विक्टर एसो दिशूजा (1989) ने अपने अनुसंधान में पाया
कि शिक्षा दो उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है—

(i) सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिशीलता

(ii) सामाजिक प्रस्तावित का निर्धारण

पीोएो मुक्ता (1991) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि
हीनता की भावना विशेषकर जातिगत या शिक्षागत होती है। शिक्षित
नारी हो या पुरुष उसकी विविधता एवं व्यवसायिक समस्याएँ होती
हैं।

शैलजा ओझा (1995) ने अपने शोध अध्ययन में निष्कर्ष
निकाला कि शिक्षिकाएँ शिक्षण कार्य, कार्य की दशाएँ एवं निरीक्षण से
स्वतंत्र हैं, असंतोष के कारणों में वेतन, उन्नति के अवसर, सहकर्मी
का व्यवहार आदि आते हैं।

सिंह ओऔपी (1995) ने अपने अध्ययन में बताया कि
संचार साधनों के विकास से स्त्रियों में जागृति आ रही है।

सचिवदानन्द (1997) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि
शिक्षा एवं विकास कार्यों के अभिग्रहण में धनात्मक सह—सम्बन्ध पाया
जाता है।
प्रसाद एवं सिंह (1999) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि व्यवहारों के अभिग्रहण में सामाजिक परिस्थितियों की अहं भूमिका होती है।

दोषी एसो एलो एवं जैन पीसी (2003) ने बताया कि वैश्वीकरण का मुख्य अभिकरण शिक्षा है तथा शिक्षित नारी एवं पुरुष उसके प्रमुख वाहक हैं।

कुमार जी (2007) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के लोगों में शैक्षिक एवं व्यवसायिक गतिशीलता अधिक पायी जाती है।